पद २६

(राग: यमन जिल्हा - ताल: केहरवा)

स्मरुनि तत्त्व हें स्वरूप पाहे। जग नोहे ब्रह्मचि आहे आहे।।धु.।। मीपण बंध हे मिथ्या वाहे। जग नोहे वस्तुचि आहे आहे। त्वंपद साक्षी तत्पद लक्षी। असिपद हें स्वरूपीं किमपि न साहे। श्रीगुरुमाणिक जय गुरु माणिक। म्हणुनी हें अखंड प्रेमें बाहे।।१।।